विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग- दशम्

विषय -हिंदी

अनुच्छेद क्या होता है?

एक अनुच्छेद किसी एक विषय से सम्बंधित वाक्यों का संयोजित रूप है। हम सभी जानते हैं कि एक वाक्य से हम एक ही विचार व्यक्त कर पाते हैं।

लेकिन एक अनुच्छेद से हम ज्यादा जानकारी व्यक्त कर सकते हैं क्योंकि एक अनुच्छेद में कई वाक्य होते हैं। हम साधारण भाषा में यह कह सकते हैं की अनुच्छेद वाक्यों का एक समूह है जो मुख्या विचार का समर्थन करता है।

एक अनुच्छेद निम्न चीज़ें करता है :

- किसी प्रक्रिया का वर्णन
- किसी के चरित्र का वर्णन
- किनहीं दो चीज़ों की तुलना
- किसी चीज़ का कारण और प्रभाव बताना आदि।

अनुच्छेद की रचना

एक अनुच्छेद को तीन भागों में बांटा गया है:

1. परिचय
2. प्रधान भाग
3. निष्कर्ष

1. परिचय (introduction)

- यह एक अनुच्छेद का पहला भाग होता है। इसमें हमें विषय का परिचय देना होता है एवं यह पढ़ते ही पता चलता है कि पूरा अनुच्छेद किससे सम्बंधित है।
- जो आपने परिचय में लिखा है, आगे आने वाले वाक्य उसी बारे में बात करेंगे। अगर हम हमारे अनुच्छेद की अच्छी शुरुआत करेंगे तो पूरा अनुच्छेद अच्छा रहेगा।
- चूंकि एक पाठक को परिचय पढने में दिलचस्प लगेगा तभी वह आगे पूरा अनुच्छेद पढ़ेगा। इसलिए यह ज़रूरी है कि हम परिचय अच्छा लिखे.

2. प्रधान भाग (main-body)

- किसी भी विषय पर परिचय लिखने के बाद हम प्रधान भाग पर आते हैं।
- यहाँ हम जिस विषय के बारे में लिख रहे हैं उसके बारे में तथ्यों, तर्कों, विश्लेषण, उदाहरणों, और अन्य जानकारी का उपयोग कर, नियंत्रण विचार पर चर्चा करते हैं।
- यहाँ पर भी हमें रोचकता बरक़रार रखनी चाहिए एवं ध्यान रहे कि हमारे शब्द मुख्य विचार से दूर तो नहीं भटक गए। हमें असंगत तर्कों को लिखने से बचना चाहिए।
- सभी वाक्यों को एक ही काल में रखना चाहिए। यह लेखन को आसन बनाता है।

3. निष्कर्ष (conclusion)

- यह भाग एक अनुच्छेद का आखिरी भाग होता है। यहाँ हमें सारे विचारों का सारांश देना पड़ता है।
- सहायक वाक्य में आपने जो चर्चा की है उसे स्वीकार करते हुए इसे आपके प्रारंभिक वाक्य का समर्थन करना चाहिए। यह आपके पाठक को यह देखने में सहायता करता है कि सहायक जानकारी विषय से कैसे संबंधित है।
- आपको लगता है कि यह स्पष्ट है, लेकिन आपका पाठक को शायद नहीं लगे। अतः जितना समझा हो सके स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए।

अनुच्छेद लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें (paragraph writing tips in hindi):

- भाषा सरल, स्पष्ट एवं समझने में आसान होनी चाहिए।
- एक अनुच्छेद 200 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।
- वाक्य छोटे होने चाहिए एवं मुक्य विचार से जुड़े होने चाहिए।
- हमें सुनिश्चित करना चाहिए की अनुच्छेद का परिचय रोचक हो क्योंकि तभी कोई पाठक आगे पढ़ पायेगा।

- निष्कर्ष आते ही पाठक को पता चल जाना चाहिए कि अब यह अनुच्छेद ख़त्म होगा। हमें ऐसा कुछ नहीं लिखना चाहिए जिससे पहक किसी उलझन में पड़ जाए।
- अगर अनुच्छेद लिखने के कुछ संकेत बिंदु दे रखे हैं तो हमें उन्ही का पालन करके अनुच्छेद की रचना करनी चाहिए।

एक अनुच्छेद लिखना इतना भी कोई मुश्किल काम नहीं है लेकिन आप एक दिन में इसमें महारथ हासिल नहीं कर सकते हैं। इसलिए आपको इसका निरंतर अभ्यास करना चाहिए ओर जल्दी ही आप शानदार अनुच्छेद लिखने लगेंगे।

नर हो न निराश करो मन को

आत्मविश्वास और सफलता

आशा से संघर्ष में विजय

कुछ भी असंभव नहीं

महापुरुषों की सफलता का आधार।

मानव जीवन को संग्राम की संज्ञा से विभूषित किया है। इस जीवन संग्राम में उसे कभी सुख मिलता है तो कभी दुख। सुख मन में आशा एवं प्रसन्नता का संचार करते हैं तो दुख उसे निराशा एवं शोक के सागर में डुबो देते हैं। इसी समय व्यक्ति के आत्मविश्वास की परीक्षा होती है। जो व्यक्ति इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना विश्वास नहीं खोता है और आशावादी बनकर संघर्ष करता है वही सफलता प्राप्त करता है।

आत्मविश्वास के बिना सफलता की कामना करना दिवास्वप्न देखने के समान है। मनुष्य के मन में यदि आशावादिता नहीं है और वह निराश मन से संघर्ष करता भी है तो उसकी सफलता में संदेह बना रहता है। कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। मन में जीत के प्रति हमेशा आशावादी बने रहना जीत का आधार बन जाता है। यदि मन में आशा संघर्ष करने की इच्छा और कर्मठता हो तो मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

वह विपरीत परिस्थितियों में भी उसी प्रकार विजय प्राप्त करता है जैसा नेपोलियन बोनापार्ट ने। इसी प्रकार निराशा, काम में हमें मन नहीं लगाने देती है और आधे-अधूरे मन से किया गया कार्य कभी सफल नहीं होता है। संसार के महापुरुषों ने आत्मविश्वास, दृढनिश्चय, संघर्षशीलता के बल पर आशावादी बनकर सफलता प्राप्त की। अब्राहम लिंकन हों या एडिसन, महात्मा गांधी हों या सरदार पटेल सभी ने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आशावान रहे और अपना-अपना लक्ष्य पाने में सफल रहे।

सैनिकों के मन में यदि एक पल के लिए भी निराशा का भाव आ जाए तो देश को गुलाम बनने में देर न लगेगी। मनुष्य को सफलता पाने के लिए सदैव आशावादी बने रहना चाहिए।

4. सबको भाए मधुर वाणी

मधुर वाणी सबको प्रिय

मधुर वाणी एक औषधि

मधुरवाणी का प्रभाव

मधुर वाणी की प्रासंगिकता।

मधुर वाणी की महत्ता प्रकट करने वाला एक दोहा है-

कोयल काको दुख हरे, कागा काको देय।

मीठे वचन सुनाए के, जग अपनो करि लेय।

यूँ तो कोयल और कौआ दोनों ही देखने में एक-से होते हैं परंतु वाणी के कारण दोनों में ज़मीन आसमान का अंतर हो जाता है। दोनों पक्षी किसी को न कुछ देते हैं और न कुछ लेते हैं परंतु कोयल मधुर वाणी से जग को अपना बना लेती है और कौआ अपनी कर्कश वाणी के कारण भगाया जाता है। कोयल की मधुर वाणी कर्ण प्रिय लगती है और उसे सब सुनने को इच्छुक रहते हैं। यही स्थिति समाज की है।

समाज में वे लोग सभी के प्रिय बन जाते हैं जो मधुर बोलते हैं जबकि कटु बोलने वालों से सभी बचकर रहना चाहते हैं। मधुर वाणी औषधि के समान होती है जो सुनने वालों के तन और मन को शीतलकर देती है। इससे लोगों को सुखानुभूति होती है। इसके विपरीत कटुवाणी उस तीखे तीर की भाँति होती है जो कानों के माध्यम से हमारे शरीर में प्रवेश करती है और पूरे शरीर को कष्ट पहुँचाती है।

कड़वी बोली जहाँ लोगों को ज़ख्म देती है वहीं मधुर वाणी वर्षों से हुए मन के घाव को भर देती है। मधुर वाणी किसी वरदान के समान होती है जो सुनने वाले को मित्र बना देती है। मधुर वाणी सुनकर शत्रु भी अपनी शत्रुता खो बैठते हैं। इसके अलावा जो मधुर वाणी बोलते हैं उन्हें खुद को संतुष्टि और सुख की अनुभूति होती है। इससे व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावी एवं आकर्षक बन जाता है। इससे व्यक्ति के बिगड़े काम तक बन जाते हैं।

कोई भी काल रहा हो मधुर वाणी का अपना विशेष महत्त्व रहा है। इस भागमभाग की जिंदगी में जब व्यक्ति कार्य के बोझ, दिखावा और भौतिक सुखों को एकत्रकर पाने की होड़ में तनावग्रस्त होता जा रहा है तब मधुर वाणी का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। हमें सदैव मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए।